International Journal of Recent Research and Review, Vol. XVI, Issue 1, March 2023
ISSN 2277 – 8322

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में विद्या भारती का योगदान

रामबाबू सोनी[1], डॉ. वेद प्रकाश शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी जयपुर
[2]प्रोफेसर शिक्षा विभाग, महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी जयपुर

प्रस्तावना

भारत में शिक्षा प्रणाली में बहुत सारे संगठन शामिल हैं और हमारे उद्देश्य उद्देश्यपूर्ण हैं, शिक्षा और शिक्षा का एक बड़ा हिस्सा समाज के सभी क्षेत्रों में है। विद्या भारती सहित अन्य प्राचार्य संगठनों द्वारा। विद्या भारती एक महत्वपूर्ण शिक्षा संगठन है जो शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस लेख में, विद्या भारती के योगदान का विस्तार से विश्लेषण किया गया है और इसमें शिक्षा प्रणाली की एक प्रभावशाली सामग्री भी शामिल है।

विद्या भारती का इतिहास और स्थापना विद्या

भारती की स्थापना 1952 में हुई थी। इसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति और मूल्यों के साथ शिक्षा प्रदान करना है। इसे भारतीय संस्कृति और शिक्षा के आदर्शों से जोड़कर देखने का प्रयास किया गया। यह संगठन भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और उसे संस्कृति आधारित बनाने की दिशा में काम कर रहा है। विद्या भारती का उद्देश्य और लक्ष्य विद्या भारती का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के अनुरूप बनाना है। इसके लक्ष्य इस प्रकार हैं:

भारतीय संस्कृति की रक्षा और प्रचार: विद्या भारती शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और संस्कारों को सहेजने और फैलाने का कार्य करती है।

समाज के हर वर्ग को शिक्षा प्रदान करना: यह संगठन गरीब, पिछड़े और आदिवासी समुदायों के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष प्रयास करता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रचार: विद्या भारती गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रचार-प्रसार में विश्वास करती है और इसके लिए पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों में सुधार करती है।

समाज में जागरूकता और सुधार: यह संगठन समाज में जागरूकता फैलाने और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देने के लिए भी कार्य करता है।

विद्या भारती द्वारा संचालित स्कूल और संस्थान

विद्या भारती कई स्कूल और संस्थान चलाती है जो विभिन्न स्तरों पर शिक्षा प्रदान करते हैं। ये स्कूल निम्नलिखित विशेषताओं के लिए जाने जाते हैं:

समग्र शिक्षा प्रणाली: विद्या भारती स्कूल एक समग्र शिक्षा प्रणाली पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसमें न केवल शैक्षणिक शिक्षा बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा भी शामिल है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा: ये विद्यालय आधुनिक शिक्षण विधियों और तकनीकी संसाधनों का उपयोग करते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ केवल बुनियादी शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं है, बल्कि इसमें एक समग्र दृष्टिकोण

शामिल है जो छात्रों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देता है। यह शिक्षा प्रणाली छात्रों को केवल किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन कौशल, नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और संस्कृति के प्रति सम्मान भी सिखाती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रमुख तत्वों में समर्पित शिक्षक, आधुनिक पाठ्यक्रम, बेहतर सुविधाएँ और एक प्रेरक शिक्षण वातावरण शामिल हैं।

समर्पित शिक्षक और प्रशिक्षित कर्मचारी: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक है कि शिक्षक न केवल विषय विशेषज्ञ हों बल्कि छात्रों के प्रति समर्पित और प्रेरक भी हों। अच्छे शिक्षक छात्र के व्यक्तिगत विकास, मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अच्छा पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री: पाठ्यक्रम को छात्रों की उम्र, उनके शैक्षिक स्तर और उनकी ज़रूरतों के अनुसार डिज़ाइन किया जाना चाहिए। इसमें नवीनतम शोध और तकनीक को शामिल किया जाना चाहिए ताकि छात्र आधुनिक दुनिया के लिए तैयार हों।

उच्च गुणवत्ता वाली सुविधाएँ: एक अच्छा शैक्षिक वातावरण वह होता है जहाँ छात्रों को पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेल के मैदान और तकनीकी संसाधनों जैसी शिक्षण और अध्ययन के लिए बेहतर सुविधाएँ मिलती हैं। इन सुविधाओं का उपयोग छात्रों की शैक्षिक यात्रा को समृद्ध और सुविधाजनक बनाता है। छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा छात्रों की विविध आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुरूप अनुकूलित की जाती है। इसमें व्यक्तिगत ध्यान, विशेष सहायता और विकासात्मक गतिविधियाँ शामिल हैं जो छात्रों के विशेष गुणों और रुचियों को प्रोत्साहित करती हैं।

संस्कार और मूल्य शिक्षा: यहां पर भारतीय संस्कार और नैतिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

विद्या भारती का योगदान ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में विद्या भारती का विशेष ध्यान उन क्षेत्रों पर होता है जहाँ शिक्षा की पहुंच सीमित है। इसके माध्यम से, निम्नलिखित कार्य किए गए हैं:

ग्रामीण स्कूलों की स्थापना: विद्या भारती ने ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक विद्यालय स्थापित किए हैं, जहाँ बच्चे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ग्रामीण विद्यालयों की स्थापना ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर को सुधारने तथा शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने की दिशा में ग्रामीण विद्यालयों की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है। भारत के विशाल और विविधतापूर्ण ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता अक्सर सीमित होती है। इन क्षेत्रों में विद्यालयों की स्थापना से न केवल बच्चों को शिक्षा का अवसर मिलता है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा मिलता है।

ग्रामीण स्कूलों की स्थापना के लाभ: शिक्षा तक पहुँच बढ़ाना: ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल स्थापित करने से शिक्षा तक पहुँच बढ़ती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि गाँवों के बच्चे, जिन्हें शहरी क्षेत्रों की तुलना में बेहतर शिक्षा नहीं मिल पाती, उन्हें भी स्कूल जाने का मौका मिलता है।

सामाजिक सशक्तिकरण: जब ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल स्थापित किए जाते हैं, तो यह स्थानीय समाज को सशक्त बनाता है। शिक्षा का प्रसार स्थानीय लोगों को

बेहतर जीवन की ओर ले जाता है और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देता है।

आर्थिक अवसर: शिक्षा को बढ़ावा देने से ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक अवसरों की उपलब्धता बढ़ती है। शिक्षित लोग रोज़गार के नए अवसर तलाशते हैं और अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार करते हैं।

नैतिक और सांस्कृतिक विकास: ग्रामीण स्कूलों में नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा का महत्व बढ़ जाता है। यह बच्चों को स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं से अवगत कराता है, जिससे उन्हें अपने समुदाय के साथ बेहतर तालमेल बनाने में मदद मिलती है।

स्वास्थ्य और स्वच्छता: स्कूलों के माध्यम से स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जागरूकता फैलाना भी संभव है। इसमें स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य जाँच और अन्य सुधारात्मक उपाय शामिल हैं, जो बच्चों और उनके परिवारों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करते हैं।

चुनौतियाँ और समाधान

ग्रामीण स्कूलों की स्थापना में कई चुनौतियाँ हैं, जैसे सीमित संसाधन, अपर्याप्त शिक्षक और बुनियादी ढाँचे की कमी। इन समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार और निजी संगठनों को मिलकर काम करने की ज़रूरत है। इसमें शामिल हैं: वित्तीय सहायता और संसाधनों का प्रावधान: स्कूलों के लिए वित्तीय सहायता और संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना। शिक्षकों का प्रशिक्षण और भर्ती: योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की भर्ती करना। सुविधाओं में सुधार: स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं और बुनियादी ढाँचे में सुधार करना।

समाज सुधार कार्यक्रम: संगठन स्वास्थ्य, स्वच्छता और महिला शिक्षा जैसे सामाजिक सुधार कार्यक्रमों में भी सक्रिय है। सामाजिक सुधार कार्यक्रम विशेष रूप से समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं और असमानताओं को दूर करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य समाज में समानता, न्याय और समृद्धि को बढ़ावा देना है। सामाजिक सुधार कार्यक्रम शिक्षा, स्वास्थ्य, महिलाओं और बच्चों के अधिकार और सामाजिक समानता जैसे विभिन्न पहलुओं को संबोधित करते हैं।

समाज सुधार कार्यक्रमों के प्रमुख पहलू:

शिक्षा में सुधार: सामाजिक सुधार कार्यक्रमों में शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, क्योंकि समाज की समग्र स्थिति को बदलने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से निःशुल्क और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती है, खासकर उन समुदायों को जो शिक्षा की पहुँच से बाहर हैं। इससे बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है और उन्हें बेहतर भविष्य के अवसर मिलते हैं।

स्वास्थ्य और स्वच्छता: सामाजिक सुधार कार्यक्रम भी स्वास्थ्य और स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इनमें स्वास्थ्य जागरूकता अभियान, टीकाकरण कार्यक्रम और स्वच्छता अभियान शामिल हैं। ये कार्यक्रम ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच बढ़ाते हैं और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।

महिला सशक्तिकरण: महिलाओं के अधिकारों और स्थिति को बेहतर बनाने के लिए कई सामाजिक सुधार कार्यक्रम चलाए जाते हैं। इनमें महिलाओं की शिक्षा,

कौशल विकास और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं। इसके अलावा महिलाओं की सुरक्षा और उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाना भी इन कार्यक्रमों का हिस्सा है।

गरीबी उन्मूलन: गरीबी उन्मूलन सामाजिक सुधार कार्यक्रमों का एक प्रमुख उद्देश्य है। इसमें आर्थिक सहायता, रोजगार सृजन और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से गरीब समुदायों को सशक्त बनाना शामिल है। ये कार्यक्रम गरीबी के प्रति संवेदनशील लोगों को संसाधन और अवसर प्रदान करते हैं।

सामाजिक समानता और अधिकार: सामाजिक सुधार कार्यक्रम सामाजिक समानता को बढ़ावा देने का काम करते हैं। जाति, धर्म और लिंग आधारित भेदभाव को खत्म करने की दिशा में प्रयास किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में समानता और न्याय स्थापित किया जाता है।

चुनौती और समाधान

सामाजिक सुधार कार्यक्रम को लागू करने में कई चुनौतियाँ हैं, जैसे कि तत्वों की कमी, जागरूकता की कमी और कुपोषण बाधाएँ। प्रभावशाली योजना और कार्यान्वयन, भागीदारी और समुदाय की सक्रियता के लिए इन उद्घाटन से झलकना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, सतत पर्यवेक्षण और मूल्यांकन से लेकर कार्यक्रम की प्रमाणिकता तक की जा सकती है।

विद्या भारती के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियाँ

विद्या भारती के स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित विशेषताओं के लिए जानी जाती हैं:

भारतीय संस्कृति और मूल्य: पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति, इतिहास और साहित्य को प्रमुखता दी जाती है।

व्यावसायिक कौशल: छात्रों को व्यावसायिक कौशल और तकनीकी शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

आधुनिक तकनीक का उपयोग: शिक्षण में आधुनिक तकनीक और संसाधनों का उपयोग किया जाता है।

विद्या भारती का समाज पर प्रभाव

विद्या भारती का समाज पर प्रभाव गहरा और व्यापक है। यह भारतीय संगठन शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक, सामाजिक और स्टार्टअप सुधार के लिए समर्पित है और इसके अनुरूप समाज के विभिन्न सिद्धांतों में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

1. शिक्षा की पहुंच और गुणवत्ता में सुधार: विद्या भारती ने विशेष रूप से ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में स्कूल स्थापित कर शिक्षा तक पहुंच बनाई है। इसके स्केल ने लाखों बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान की है, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता और भविष्य में स्थिरता में सुधार हुआ है।

2. सांस्कृतिक और नैतिक विचारधारा का संरक्षण: भारती विद्या ने शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति और नैतिक विचारधारा को शामिल करके सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा दिया है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, रीति-रिवाजों और सामाजिक मूल्यों से अलग किया जाता है, जिससे समाज में सांस्कृतिक एकता और समझ को बढ़ावा मिलता है।

3. समाज में समानता और समावेशिता: विद्या भारती ने विभिन्न सामाजिक और आर्थिक वर्गों के बच्चों को समान शिक्षा के अवसर प्रदान किए हैं। इसने शिक्षा को विशेष रूप से उन समुदायों तक पहुँचाया है जिनके लिए शिक्षा तक पहुँच सीमित थी। परिणामस्वरूप, सामाजिक समानता और समावेशिता में सुधार हुआ है और पिछड़े वर्गों के बच्चों को भी शिक्षा का लाभ मिल रहा है।

4. स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूकता: विद्या भारती ने स्कूलों में स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यक्रमों को शामिल करके समाज में जागरूकता फैलाने का काम किया है। इसके द्वारा चलाए गए स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य जाँच और अन्य पहल समाज में स्वास्थ्य के मानकों को बेहतर बनाने में सहायक रही हैं।

5. महिला सशक्तिकरण: विद्या भारती के कार्यक्रमों ने महिला शिक्षा और सशक्तिकरण पर भी ध्यान केंद्रित किया है। महिला शिक्षा और कौशल विकास के माध्यम से, संगठन महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने में योगदान देता है, जिससे समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलता है।

6. सामाजिक सुधार: विद्या भारती ने सामाजिक सुधार के लिए अनेक पहल की हैं, जैसे जाति, धर्म और लिंग के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने के प्रयास। इसके माध्यम से समाज में न्याय और समानता की भावना को बढ़ावा मिलता है और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है।

भविष्य में, विद्या भारती को निम्नलिखित दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है:

विद्या भारती ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, लेकिन भविष्य में और अधिक प्रभावी और व्यापक बदलाव लाने के लिए संगठन को कई दिशाओं में काम करने की आवश्यकता है। यहां कुछ प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की गई है, जिन पर विद्या भारती को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है:

1. प्रौद्योगिकी एकीकरण और डिजिटल शिक्षा आधुनिक युग में, शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी उन्नति और डिजिटल संसाधनों का उपयोग अनिवार्य हो गया है। विद्या भारती को अपने विद्यालयों में डिजिटल शिक्षा को अपनाना चाहिए और तकनीकी उपकरणों का प्रभावी उपयोग करना चाहिए। इसमें स्मार्ट क्लासरूम, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन संसाधनों का एकीकरण शामिल है। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से, छात्र अधिक इंटरैक्टिव और सूचनात्मक सामग्री तक पहुँच सकते हैं, जिससे उनकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।

2. संवेदनशीलता और समावेशिता विद्या भारती को विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों की आवश्यकताओं को समझते हुए शिक्षा में समावेशिता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसे सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षा सभी बच्चों के लिए सुलभ हो, यहां तक कि उन बच्चों के लिए भी जिनके पास सामाजिक या आर्थिक बाधाएं हैं। विशेष योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सभी बच्चों को समान अवसर मिलें।

3. शिक्षकों का सतत प्रशिक्षण और विकास शिक्षकों की गुणवत्ता और उनकी पेशेवर योग्यता शिक्षा के स्तर

को सीधे प्रभावित करती है। विद्या भारती को नियमित रूप से शिक्षकों के प्रशिक्षण और विकास पर ध्यान देना चाहिए। इसमें नवीनतम शिक्षण पद्धतियां, मनोवैज्ञानिक सहायता और तकनीकी प्रशिक्षण शामिल होना चाहिए। इसके अलावा, शिक्षकों के लिए प्रेरक कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित किए जाने चाहिए।

4. स्थानीय समुदायों के साथ भागीदारी शिक्षा में स्थायी सुधार लाने के लिए विद्या भारती को स्थानीय समुदायों और अभिभावकों के साथ सक्रिय भागीदारी बढ़ानी चाहिए। समुदाय की भागीदारी और समर्थन से स्कूल की गतिविधियों और नीतियों को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा, समुदाय की भागीदारी संसाधन जुटाने में भी मदद कर सकती है।

5. स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य विद्या भारती को शिक्षा के साथ-साथ छात्रों के स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए। इसमें स्कूलों में स्वास्थ्य जांच, मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यशालाएं और स्वच्छता अभियान शामिल होने चाहिए। बच्चों के समग्र विकास के लिए स्वस्थ और संतुलित वातावरण प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

6. पाठ्यक्रम में नवाचार पाठ्यक्रम को समय की मांग के अनुसार अद्यतन और प्रासंगिक बनाया जाना चाहिए। विद्या भारती को पाठ्यक्रम में नवीनतम शोध, तकनीकी प्रगति और जीवन कौशल के तत्वों को शामिल करना चाहिए। इसके माध्यम से, छात्र न केवल शैक्षणिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, बल्कि वे जीवन में उपयोगी कौशल भी सीख सकेंगे।

7. सतत निगरानी और मूल्यांकन अंततः, विद्या भारती को अपने कार्यक्रमों और पहलों की निरंतर निगरानी और मूल्यांकन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होगा कि सभी योजनाएं और गतिविधियां प्रभावी हैं और अपेक्षित परिणाम दे रही हैं। नियमित मूल्यांकन से सुधार की संभावनाओं की पहचान की जा सकती है और आवश्यक समायोजन किया जा सकता है। इन दिशानिर्देशों पर ध्यान केंद्रित करके, विद्या भारती भविष्य में भारतीय शिक्षा प्रणाली में अधिक प्रभावी योगदान दे सकती है और शिक्षा के क्षेत्र में स्थायी और सकारात्मक बदलाव ला सकती है।

निष्कर्ष

विद्या भारती ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली भूमिका निभाई है। अपनी स्थापना के बाद से ही इस संगठन ने दण्ड के क्षेत्र में भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी है तथा भारतीय दण्ड व्यवस्था को एक नया परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है। विद्या भारती का प्रमुख योगदान यह है कि उसने ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा की पहुंच बढ़ाने के लिए समर्पित प्रयास किए हैं। इसके अंतर्गत विद्यालयों की स्थापना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रसार तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित पाठ्यक्रम को शामिल करना शामिल है। यह संगठन न केवल शैक्षणिक अनुशासन बल्कि नैतिक एवं सांस्कृतिक अनुशासन पर भी जोर देता है, जो बच्चों के समग्र विकास में सहायक है। इसके अलावा विद्या भारती ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने तथा समाज के विभिन्न वर्गों को समान अवसर प्रदान करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। इसके विद्यालय एवं संस्थान आधुनिक शिक्षण विधियों, डिजिटल संसाधनों

तथा तकनीकी नवाचारों को अपनाकर शिक्षा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देते हैं। यद्यपि विद्या भारती ने अनेक सफलताएं अर्जित की हैं, फिर भी अभी भी अनेक चुनौतियां एवं सुधार की गुंजाइशें हैं। भविष्य में विद्या भारती को प्रौद्योगिकी एकीकरण, समावेशिता, शिक्षकों के सतत प्रशिक्षण तथा स्वास्थ्य-मानसिक तंदुरुस्ती पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके साथ ही स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी तथा पाठ्यक्रम में नवाचार भी आवश्यक है।

संदर्भ

1. अल्तेकर, ए.एस. (1944). प्राचीन भारत में शिक्षा. नंद किशोर एंड ब्रदर्स.
2. बाशम, ए.एल. (1954). द वंडर दैट वाज़ इंडिया, सिडविक और जैक्सन.
3. चौबे, एस.पी., और चौबे. ए. (2003), प्राचीन और मध्यकालीन भारत में शिक्षा. विकास पब्लिशिंग हाउस.
4. दत्ता, बी., और सिंह. ए.एन. (1962). हिंदू गणित का इतिहास. एशिया पब्लिशिंग हाउस.
5. फ्लड. जी. (1996). हिंदू धर्म का परिचय, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. की, एफ.ई. (1918). प्राचीन भारतीय शिक्षाः इसकी उत्पत्ति, विकास और आदर्शों पर एक जांच। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. मुखर्जी, आर. के. (1947). प्राचीन भारतीय शिक्षाः ब्राह्मणवादी और बौद्ध, मोतीलाल बनारसीदास.
8. प्रसाद, एस.सी. (2005). उत्तर भारत की मार्शल परंपराएँ. डी. के. प्रिंटवर्ल्ड.
9. शार्फ, एच. (2002)। प्राचीन भारत में शिक्षा, ब्रिल.
10. सुब्बारायप्पा, बी.वी. (1989)। भारतीय खगोल विज्ञानः एक स्रोत-पुस्तक। नेहरू केंद्र.
11. वात्स्यायन, के. (1991). अंतरिक्ष की अवधारणाएँ: प्राचीन और आधुनिक, अभिनव प्रकाशन
12. विट्ज़ेल. एम. (1997), ग्रंथों के अंदर, ग्रंथों से परेः वेदों के अध्ययन के लिए नए दृष्टिकोण। हार्वर्ड ओरिएंटल सीरीज़।
13. जिस्क, के.जी. (1991). प्राचीन भारत में तप और चिकित्साः बौद्ध मठ में चिकित्सा. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
14. अल्तेकर, ए.एस. (1965), प्राचीन भारत में शिक्षा. नंद किशोर एंड ब्रदर्स.
15. मुखर्जी, आर.के. (1951). प्राचीन भारतीय शिक्षाः ब्राह्मणवादी और बौद्ध, मोतीलाल बनारसीदास,
16. संकालिया, एच.डी. (1972). नालंदा विश्वविद्यालय. ओरिएंटल पब्लिशर्स.
17. थापर, आर. (2002), प्रारंभिक भारतः उत्पत्ति से 1300 ई. तक. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.
18. आशेर, सी.बी. (2015), नालंदा: महान मठ की स्थापना। मार्ग फाउंडेशन.
19. बील. एस. (1884). सी-यू-की: पश्चिमी दुनिया के बौद्ध अभिलेख. दुबनेर एंड कंपनी.
20. दत्त. एस. (1962). भारत के बौद्ध भिक्षु और मठः उनका इतिहास और भारतीय संस्कृति में उनका योगदान, जॉर्ज एलन और अनविन लिमिटेड.
21. भारत सरकार (2010), नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010. भारत का राजपत्र.
22. मुखर्जी, आर.के. (1951). प्राचीन भारतीय शिक्षाः ब्राह्मणवादी और बौद्ध. मोतीलाल बनारसीदास,
23. संकालिया, एच.डी. (1972), नालंदा विश्वविद्यालय. ओरिएंटल पब्लिशर्स.
23. संकालिया, एच.डी. (1972), नालंदा विश्वविद्यालय, ओरिएंटल पब्लिशर्स.
24. सेन, टी. (2005), बौद्ध धर्म, कूटनीति और व्यापारः चीन-भारत संबंधों का पुनर्गठन, 600-1400. यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस.
25. बील, एस. (1884). सी-यू-की: पश्चिमी दुनिया के बौद्ध अभिलेख दुबनेर एंड कंपनी.
26. डुंडास, पी. (2002). जैन, रूटलेज.

27. दत्त, एस. (1962). भारत के बौद्ध भिक्षु और मठः उनका इतिहास और भारतीय संस्कृति में उनका योगदान, जॉर्ज एलन और अनविन लिमिटेड.
28. घोष, ए. (1990), भारतीय पुरातत्व का विश्वकोश, ब्रिल
29. मजूमदार, आर.सी. (1960), द क्लासिकल एज, भारतीय विद्या भवन,
30. मुखर्जी, आर.के. (1951). प्राचीन भारतीय शिक्षा: ब्राह्मणवादी और बौद्ध. मोतीलाल बनारसीदास.
31. संकलिया, एच.डी. (1949), गुजरात का पुरातत्वः काठियावाड़ सहित. नटवरलाल एंड कंपनी.
32. सेन, टी. (2005). बौद्ध धर्म, कूटनीति और व्यापारः चीन-भारत संबंधों का पुनर्गठन, 600-1400. यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस.
33. सरकार, डीसी (1965)। भारतीय पुरालेख. मोतीलाल बनारसीदास.
34. थापर, आर. (2002), प्रारंभिक भारतः उत्पत्ति से 1300 ई. तक. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.
35. हुसैन, एस.ए. (1983). भारत की राष्ट्रीय संस्कृति. नेशनल बुक ट्रस्ट.
36. जाफर, एस.एम. (1936), मुस्लिम भारत में शिक्षा, रिपन प्रिंटिंग प्रेस.
37. मुखर्जी, एस. एन. (1951). भारत में शिक्षा का इतिहासः आधुनिक काल, आचार्य बुक डिपो.
38. रिचर्ड्स, जे.एफ. (1993), मुगल साम्राज्य. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
39. सालेटोर, बी.ए. (1934). विजयनगर साम्राज्य में सामाजिक और राजनीतिक जीवन, बी.जी. पॉल एंड कंपनी.
40. शर्मा, आर.एन. (1960). प्राचीन और मध्यकालीन भारत में भारतीय शिक्षा. अटलांटिक पब्लिशर्स और डिस्ट्रीब्यूटर्स
41. सैयद. एम. एच. (2003). मुस्लिम शिक्षा का इतिहास. अनमोल प्रकाशन
42. आलम, एम. (2004). राजनीतिक इस्लाम की भाषाएँ: भारत 1200-1800. यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो राष्ट्रपति.
43. ईटन, आर.एम. (1978). बीजापुर के सूफी, 1300-1700: मध्यकालीन भारत में सूफी की सामाजिक
44. हुसैन, एस.ए. (1983). भारत की राष्ट्रीय संस्कृति. नेशनल बुक ट्रस्ट.
45. जाफर, एस.एम. (1936). मुस्लिम भारत में शिक्षा. रिपन प्रिंटिंग प्रेस.
46. नाथ, आर. (1982), सल्तनत वास्तुकला का इतिहास. अभिनव प्रकाशन,
47. रिचर्डस, जे. एफ. (1993), मुगल साम्राज्य, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
48. शर्मा, आर.एन. (1960), प्राचीन और मध्यकालीन भारत में भारतीय शिक्षा. अटलांटिक पब्लिशर्स और डिस्ट्रीब्यूटर्स
49. सैयद, एम.एच. (2003). मुस्लिम शिक्षा का इतिहास. अनमोल प्रकाशन.